

DPN 5795

Title : नित्य सिद्धाग्नि विधि NITYA SIDDHĀGNI VIDHI

Run. No. 6486

Cat. No. दे ८६

Micro. No.

Subject *Religious Ritual*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / *नेपालभाषा निर्देश दे*
New direction.

Size in cms. 20 X 8

Folios 27

Lines (in a page)

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 815

Ruler / place *सुमति जयजितामित्र मल्लदेव*

Script : New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. : *Mantra monogram मन्त्रमाला ६ १*

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
अंनमः श्रीगुरुवे ॥ ॥ अथ नित्य सिद्धाग्नि विधिनिर्णयः ॥ अथ नित्य कर्म धुन्दे ॥

समाप्ति / Colophon इति नित्य सिद्धाग्नि विधि समाप्तः ॥ ॥ ... ॥ ८१५ वैशाखशुक्ल ८ श्रावण

0 cms.

5

10

15

20

ॐ नमो श्रीश्री सुमति जमजिता मित्र मल्ल डेव ॐ दमेका नगु सिद्धुलि स ह्यया पोया जुल ॥
श्रीश्री श्री सिद्धिलक्ष्मी प्रीतिपुत्र ॥ ॥ ॥ ॥

15

10

5

0

cms.

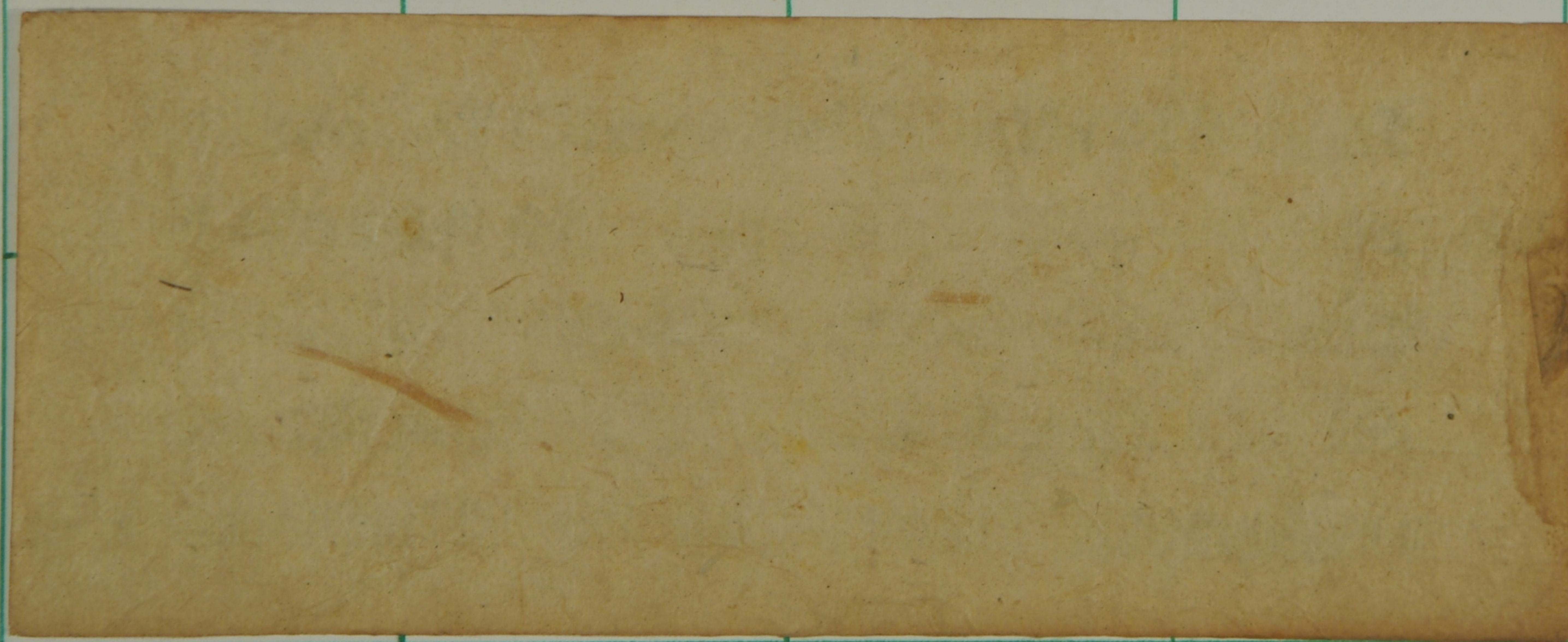
5

10

15

20

25



सु. नि. ॐ नमः श्रीगुरुवे ॥ ॥ अथ निश्चितिः क्षात्रि विधिर्लख्यः ॥ ॥ ध्वनिश्च कर्मधनकः ॥

वसलपविधिः ॥ अग्निः कुक्षुदयकः ॥ ॥ कलसगुहः ॥ देवः ॥ वलिमालकाः ॥ ॥ गध

रुमप्रस. कामात्रिः ॥ ॥ अग्निः कुक्षुद्विदिग्धलवलिः ॥ ध्वनिमालकावसलप्य

॥ ॥ कलसाञ्जनं ॥ ॥ अग्निः कुक्षुद्विदिग्धलवलिः ॥ ध्वनिमालकावसलप्य

वीजमृदुश्चादिः ॥ ॥ गुरुनमस्कात्रः ॥ मृदुश्चादिः ॥ ॐ कैंसः ॥ मृदुश्चादिः

गाम

दू॥ कनः ॥ अधनं ॥ ॥ ॐ कैंसः ॥ कनः ॥ अधनं ॥ ॥ ॐ कैंसः ॥ कनः ॥ अधनं ॥

३॥ सनार्धपात्रपूजा ॥ ॥ कनः ॥ अधनं ॥ ॥ ॐ कैंसः ॥ कनः ॥ अधनं ॥

आवाहनः ॥ यासापमानः ॥ ॥ अग्निः ॥ ॥ आवाहनः ॥ यासापमानः ॥

सनायनमः ॥ सिंहासनायनमः ॥ ॥ ध्वनिः ॥ ॥ अग्निः ॥ ॥ आवाहनः ॥ यासापमानः ॥

न्दमधितं ॥ कपालपादितं ॥ ध्वनिः ॥ ॥ आवाहनः ॥ यासापमानः ॥

ॐ न नागनागसिंहवतं॥ त्रिशूलं चाक्षुषं विना हं दक्षिणं कन॥ कपालं कृषि
 कांस्यं यागमद्राकनद्वयं॥ कर्मात्म्यं श्रुतं दवं मृश्रागविनाभनं॥ वृत्ति
 भानं॥ ॥ ॐ कंसं मृश्रं श्रुतं संपूर्णं कलसमूर्णं यनम॥ ३॥ वलि॥ ॐ
 वक्रविश्वरूपसदाभिवेश्वरत्वनम॥ ॥ ॐ सतिह्यानम॥ ॐ पद्ममासु नाम
 ३ संवत्सरेत्यनम॥ ॐ समुद्रत्वनम॥ ॐ निधिनक्षत्रयागमूर्णं ग्रहना

मिह्यानम॥ ॐ मयित्वानम॥ ॐ चित्रजीवत्वनम॥ ॐ लाकपालत्वनम॥ ॐ
 नागत्वनम॥ ॐ नृद्वयद्वयत्वनम॥ ॐ त्रिशूलं संपूर्णं कलसमूर्णं यपाप॥ वलि
 ॥ प्रियाश्रुति॥ वक्र॥ ॥ कस्तन॥ श्रियेन म॥ ॥ सिधुमूढ॥ लक्ष्मि नम॥
 ॥ ॥ आवाहनादि॥ धनमद्रां॥ ॥ ऊपा॥ ॐ कंसं मृश्रं स्वाहा॥ १०॥ क्राश्र॥ वक्राश्रुम
 र्येष्टसुतलाकपाले नत्यर्चिताय प्रधनं मुक्त॥ त्वमवधेरेतवमादिदवं मृश्र

ॐ

सु० न

धनं॥ ॥खुं पत्र हंसिनी मंगुलकाय॥ खुं निर्वीर्यमागर्जद तर्कन्यायस्वाहा॥ खुं विषमा
 लवप्रसमतिमध्वमायवोषद्॥ खुं सकल दानिगात्रिष्टकसुवलीनश्रुनामिकाय
 हं॥ खुं सर्वापदां लाघितत्रलिकानिकायवषद्॥ खुं सकल भद्रप्रमथानि श्रुमाय
 रुद्र॥ ॥ॐ गि कन्यास॥ ॥ खुं नमः सर्वसिद्धिमागिनीत्या उर्ध्ववक्रनाथपादकां॥
 खुं नमः सर्वसिद्धिमागिनीत्या पूर्ववक्रनाथपादकां॥ खुं नमानि श्लादिता नन्दनन्दि

नाम
४

०

०

नायेदक्षिणवक्रनाथपादकां॥ खुं सकल कलचक्रनायिकाये उर्ध्ववक्रनाथपादकां॥ खुं रग
 वतिवधुकापालिन्येपश्चिमवक्रनाथपादकां॥ खुं नमः सर्वसिद्धिमागिनीत्या उर्ध्वव
 नाथ॥ ॥ॐ गि वक्रुं न्यास॥ ॥ खुं पत्रमहंसिनि स - र्वल्लाता रुदयाय नमः॥ खुं निर्वीर्यमा
 गर्जदविषामादफिमित्रसत्त्वा हा॥ खुं विषमालवप्रमथानि श्रुनादिवा धमिरवा
 येवोषद्॥ खुं सकल दानिगात्रिष्टकसुवलीनश्रुनामिकाय हं॥ खुं सर्वापदां लाघि

०

Cms.

5

10

15

20

25

सि० नि

कनलिभूतफमकयनउग्रयायवषट्॥ रवुं सकलमद्रूपमधीनभूतकभक्तिभूमायहृद्॥ ॐ नमः
 रुन्यास॥ ॥ कौं श्रीं कलपाग्रासनाय पादकां॥ ॐ नमः ॐ कौं हौं हूं हौं कौं नमः कलपाग्र
 दानकायपादकां॥ ॥ रवुं हृदयाय नमः श्यादि॥ श्री वाहनादि॥ धनमूद्रां॥ प्राकृष्टां॥ ग
 यत्री॥ कौं श्रीं सिद्धि लक्ष्मीवदह नवश्रधिक ॥ धीमाहि तन्नालक्ष्मी प्रसादयात्॥
 आत्मादि सर्ववस्तुसिंदनं॥ ॥ कौं श्रीं श्रद्धपाग्रासनाय पादकां॥ कौं श्रीं मूर्ति आनन्दहेतु

गाम
३

वायवोषट्॥ कौं श्रीं रवुं श्वासः सः सः सः पनादवीभूतवमः स्वाहा॥ इत्यारभधनं॥ ॐ कौं हौं
 हूं हौं कौं नमः॥ ३॥ रवुं हृदयाय नमः श्यादि॥ श्री वाहनादि॥ धानिमूद्रां॥ ॥ रूतशुद्धि
 ॥ ॐ कौं श्रीं कौं हौं हूं हौं कौं नमः॥ ॥ आत्मपूजा॥ रवुं आत्मन चन्दनं नमः॥ रवुं श्रु
 कानं नमः॥ रवुं सिंदनं नमः॥ रवुं सर्वजनमाहता नमः॥ ॐ कौं हौं हूं हौं कौं
 नमः॥ आत्मन पूष्य नमः॥ विन्दु यः॥ रवुं सकलमद्रूपमधीनभूमायहृद्॥ ॐ

सि० न ३ तिश्रात्मपूजा ॥ ॥ श्रुमकुं धलां का विरूपने ॥ गभयग्रीमकुं धकृष्णनिग्रीकधं ॥ ॐ रघुं सि
 द्धिलक्ष्मीविग्रहश्चादि ॥ ॥ चउ४ संस्कार ॥ मूलननिग्रीकधं ॥ श्रुमधप्राकधं ॥ गनताउ
 नं ॥ कवचनाश्रुवपुं० नं ॥ धनमूद्रा ॥ वृत्तिचउ४ संस्कार ॥ श्रुमधसंमार्जन ॥ कवचनल
 पन ॥ ॥ आसन ॥ श्रुमककृष्णपुत्रदासनं नमः ॥ श्रुश्रुदधं ॥ श्रुमकुं ॥ त्रैलोक्यं सकल
 भद्रप्रमथानि श्रुमयाय रुद्र ॥ ॥ रघुं पनमहंसिनि क ॥ अनश्रवाग्रय ॥ साखिकी गोरुसी ता

नाम
३

मसा ॥ ॐ रघुं सिद्धिलक्ष्मीविग्रहश्चादि ॥ गभयग्रीमकुं धकृष्णनिग्रीकधं ॥ ॐ रघुं १० सफदभाह
 यलवक्रिकनधं ॥ श्रीमहाचधुतं संकर्षणिकालिमन्त्रातहः ॥ वर्ध १० ॥ ॥ क ॥ अन
 गभयग्रीमचउ४ प ॥ ॥ त्रैलोक्यं पनमहंसिनि नकधन्यरूपनं ॥ ॥ श्रुयागधवीहिक
 पनं ॥ नवाकनधपतासनं ॥ ॥ त्रैलोक्यं सकलभद्रप्रमथानि श्रुमयाय रुद्र पूषा ॥ ॥ त्रैलोक्यं क
 वचनसामधं ॥ ॥ त्रैलोक्यं श्रुमधकृष्ण ॥ ॥ त्रैलोक्यं मन्त्रासनायपादकां ॥ ॥ त्रैलोक्यं कृष्णलताम

सि० नि १ ॥ ध्या नवाक्षरं ध्यानि कित्वा ॥ ॥ या न्यास न श्रीपाद कांपूजयामि ॥ जैंगल ४ अक्षरं सुवक्षे च
 तन ॥ जैंगल ५ म ॥ ॥ जैंगल दयन ग लं ध्यानं ॥ ॥ वागीश्वरी पूजा ॥ जौ वागीश्वर्ये नमः
 ॥ जौ वागीश्वराय नमः ॥ आवाहनादि ॥ धनूयानि मूद्रां ॥ ॥ यजमान न काय मादाय
 हा प्रदापयतु ॥ हाता कायं श्रमु धर्मादक न प्राप्नु ॥ ॥ गयया कायं कथयतु ॥ ॥ जैंगल ६
 जौ जौ हूं हूं १० कायं निधाय ॥ सिका ४ नमः ॥ सिका ३ स्वता ३ नमः ॥ ॥ जैंगल ७ तत्त्व

नाम
 १

नत कायं सं पूज ॥ म ॥ जैंगल ८ श्री नमः सर्व सिद्धि यागि नित्य ४ श्रीपाद कां ॥ ॥ जैंगल ९ म ॥
 पूज ॥ ॥ जैंगल १० सर्व सिद्धि मा १० श्रीपाद कां ॥ काय दक्षिण कारणा ॥ ॥ जैंगल ११ नमानि शादिता
 न नर नन्द्ये श्रीपाद कां ॥ स्वाम का ॥ ॥ जैंगल १२ कल कल चक्र नायिकाये श्रीपाद कां
 ॥ कृष्णाय ॥ ॥ जैंगल १३ पंचाक्षरं ध्या कर्मान श्रवणा नमः ॥ जैंगल १४ सधन यजमान का स्वा न
 काय ॥ ध्यात हाम सि पूजा ॥ ॥ श्रुति मादाय ॥ याय मनु ॥ जैंगल १५ हूं हूं हूं श्रुति मा

हूं
 हूं
 हूं

15

सुनि हूं हूं हूं हूं स्वाहा ॥ स्वस्ति वाक्परा ॥ स्वस्ति कूर्या तदा विद्ये स्वस्ति मार्तुधुमवत् ॥ याः
 गीता स्वस्ति सर्वाश्च स्वस्ति पीअस्व कूर्या ॥ पूर्वदक्षिणतश्च ॥ पूर्वार्द्धदक्षिणतश्च ॥ स्व
 स्ति वक्रागमस्त्वानु ॥ उपप्रकटदेवता ॥ हेनवाहेनवीसाक्ष ॥ स्वस्ति स्वस्वस्वस्वस्वकका ॥
 स्वमन्त्राश्च स्वमन्त्राश्च स्वायुधापत्रिवात्रिका ॥ ग्रहनक्षत्राभिस्त्वा ॥ स्वस्ति सर्वस्वस्वस्व
 या ॥ स्वस्ति वीनाप्रमनाश्च ॥ यागिन्यागधनायका ॥ स्वस्ति देवाधिदेवत्वं ॥ मनुनामानि

नाम
 ए

10

नमः ॥ हव्यपलालि रूपाश्च ॥ स्वस्ति कलाप्रदवता ॥ स्वस्ति राजाप्रकानानु ॥ यजमानस्व
 स्ति सर्वदा ॥ ॐ नमः स्वस्ति वाक् ॥ ॥ पञ्चवलिविय ॥ कथुयाखवलास ॥ कथुयाहवन
 वालिसं ॥ वदक कूर्या गीता ॥ वामधुगध ॥ पूजनं ॥ वालि ॥ मन्त्रां ॥ ऊपा ॥ स्नात्रा ॥ एभेर्याप
 उमिश्रादि ॥ ॥ उदवा ॥ आसना ॥ पूजना ॥ वालि ॥ मन्त्रां ॥ ॥ हृदयनश्चाचमनं ॥ तनसंप
 द्वा ॥ कवचनं ॥ धननप्रकाश ॥ ॥ उं क्रौंचि नृपिं गलहनश्चरदहश्च सर्वस्वापयस्वा

5

0

cms.

5

10

15

20

25

सि० न हा॥ ॐ श्रीं प्रकलितं वन्दे जातवदं कृतमनं॥ सवर्धवर्धमनलं समिधं सर्वतामखं॥ अ
 मुखाय नमः॥ ॥ अरुपाय नमः॥ वदीमास नमः॥ त्रैपादकां॥ क्रौं पादकां॥ श्रीं पादकां॥ कुं पाद
 कां॥ ॥ कृमयन्ति भित्तयित॥ ॥ पूर्वपूजन॥ वदन्धनमः॥ त्रैलोक्यं आश्रितानपी ० श्री
 ३॥ वलि॥ दक्षिणा॥ ॐ सिद्धभवाय नमः॥ त्रैलोक्यं जालंधरपी ० श्री ३॥ वलि॥ पश्चिम॥
 ॐ सर्वं क्रौं श्रीं भित्तय नमः॥ त्रैलोक्यं पूर्वगिरिपी ० श्री ३॥ वलि॥ उरु॥ त्रैलोक्यं क्रौं श्रीं माया

नाम

१०

दयोः॥ ॐ ह्रीं कामरूपपी ० श्री ३॥ वलि॥ ४॥ ॥ कृष्णदूतदंष्ट्रसंपूजा॥ ह्रीं नमोऽयपाद
 कां॥ ह्रीं अग्नयपादकां॥ ह्रीं यमायपादकां॥ ह्रीं नेम्यायपादकां॥ ह्रीं वरुणायपादकां॥
 ह्रीं वायवायपादकां॥ ह्रीं कवेनायपादकां॥ ह्रीं नृणां नायपादकां॥ ह्रीं अक्षयपादकां॥ ॐ
 उर्ध्वायपादकां॥ ध्वजं वलि॥ ॥ स्वर्गादिपूजा॥ त्रैलोक्यं श्रीं सिद्धभवाय नमः॥ नवश्रीपा
 दकां॥ त्रैलोक्यं श्रीं श्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः॥ अग्नि

श्रीं
श्रीं
श्रीं
श्रीं

श्रीं
श्रीं
श्रीं
श्रीं

सि० नि
११

॥ ॥ समिधदयं ॥ त्रकं प्रद्योतनं ॥ नृकं रूक्षीकृत्यात् ॥ हृदयनः श्रितं संमरीतं ॥ हृदाः कृष्ण
नयनसुतं ॥ ॥ वलिपूजनं ॥ ॐ वैष्णवननकागवदं ॥ हावलाहिनाहसर्वकर्माणि साधय
स्वाहा ॥ ॥ अकृष्णवाश्रवास्तुली संस्तुता ॥ अश्रुप्रक्षाल्य ॥ हृदयनप्रतर्पणं ॥ अश्रु
संमार्जनं ॥ ॥ हृदयनः घृतश्रितसकृद्य ॥ इक्षीनभिया घृतः शालाजनं ॥ पूजनं ॥ चन्दनादि
॥ त्रैलोक्यप्रद्योतनाय नमः ॥ ॥ धनमुद्रां ॥ ॥ आश्विनकृष्णं ॥ आर्यपापहर्तृद्वय ॥ आश्वपाप

नाम
११

हर्तृपत्रं ॥ आश्वसुतगच्छा ॥ सर्वे सर्वमाश्रुप्रतिष्ठितं ॥ ॥ श्रितदभक्रिया ॥ त्रैलोक्यहृदयनग
र्तृधनाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यपुंश्रवनाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यभित्तमकुक्षीमनाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यमि
ख्याकागकर्माय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यकवचननिःक्रमनाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यमूर्ति ॥ मूर्ति ॥ रत्नं श्रितस्व
रूपनाम ॥ श्रीसिद्धाग्निं श्रीसिद्धाग्रयनामकनधाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्य ॥ त्रैलोक्य ॥ त्रैलोक्य ॥ त्रैलोक्य
लप्राप्तनाय स्वाहा ॥ उपनापत्रवकुक्षी ॥ अन्नप्राप्तनाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्य ॥ त्रैलोक्य ॥ त्रैलोक्य ॥ त्रैलोक्य

सु. नि
१२

जकनधाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यवक्रधकर्मरदाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यवक्रधवदकनधाय स्वाहा
॥ त्रैलोक्यवक्रधवगमाकाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यपश्चिमवक्रधविवाहाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यपत्रवक्रध
चतुर्धाय स्वाहा ॥ ॥ अग्निप्रतिष्ठां कर्तव्या ॥ नवाक्षरपंचवक्रध ॥ अग्निपूर्व ॥ त्रैलोक्यगर्भादि
कर्मप्रदमिदमागधपूर्वयुक्तं क्रियालिखितं सर्वालोकानयुक्तं सकलगुणहरं सफज्जिह्वा निवेतं हि ॥ द
वी श्रीसिद्धान्तं सहनकरसनासिद्धिग्रन्थं सुमनं लाजामय्याय नारायणसविभिनासप्रतिष्ठातु

नाम
१२

नियं स्वाहा ॥ त्रैलोक्यप्रदमक्रिया ॥ ॥ अग्निपत्रवक्रधविवाहाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यपत्रवक्रध
जकनधाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यपत्रवक्रधविवाहाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यपत्रवक्रधविवाहाय स्वाहा ॥ त्रैलोक्यपत्रवक्रध
नामनं ॥ कथं सुखाय वक्रं प्रकलहासनादिनि ॥ सफवर्धनवक्रिह्वा अवादिह्वाकन ॥ स्वा
हापत्नीस्तिगावाममागधकर्मकर्मसु ॥ ॐ अग्निर्वायुः पृथ्वीः नमः ॥ एतन्नासिद्धान्तं ॥
नमादवत्य उद्गम ॥ स्वधा पिहत्या दक्षिणा ॥ ॐ नमोऽय स्वाहा ॥ ॥ चक्रहाम ॥ ॐ नमोऽय स्वाहा

सु० १४

स्वाहा॥ उं क्रौं मायाये स्वाहा॥ उं क्रौं दिग्ग्या स्वाहा॥ उं क्रौं चन्द्रमसे स्वाहा॥ उं क्रौं वज्रहा स्वा
हा॥ उं क्रौं प्रजापतये स्वाहा॥ उं क्रौं देव्यै स्वाहा॥ उं क्रौं मृषियै स्वाहा॥ उं क्रौं कन्दार्यै स्वा
हा॥ उं क्रौं अद्यै स्वाहा॥ उं क्रौं मध्याये स्वाहा॥ उं क्रौं सदसम्पत्तये स्वाहा॥ उं क्रौं अरुमने स्वा
हा॥ ॥ तर्कान्निपञ्चहाम॥ उं ह्रस्वाहा॥ उं उव॥ स्वाहा॥ उं स्त्र॥ स्वाहा॥ उं रु॥ उव॥ स्वाहा
॥ उं वे॥ अन्ननक्तानवदब्हावलाहिनादसर्वकर्माधिसाधय स्वाहा॥ ३॥ ॥ पूजने मूलमनु

गाम
१४

भा॥ अथवाहनं॥ उं क्रौं यासापन्यादि॥ सिद्धाग्निष्मन्तं॥ उं क्रौं नौरीं नैकवर्धप्रितयनदहनं
हेनवं सफजिकं तद्वस्त्रासिद्धिलक्ष्मीकनचउनधनं भक्तिश्च वासकायं॥ वक्रैकं प्रतसंस्कं
मरुतनउपउसप्रकाल्यदीपं आगं कं भक्तिकारीदभादिभवसिगापाउवाश्रितदेवा॥ ॥
अग्निमधुलसां गमं निक्षिह॥ अवाहनादिया न्याकमृदानवकंप्रदर्भयत्॥ ॥ अथवा
याघी वमनीयस्त्रानादिकं वमुयस्त्रापवितचन्दनसिंदूरपूष्पादिनासेपूजयत्॥ नवा

सि० नि १५
 कनका ॥ ॐ नमो भगवते ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता
 कनिका ॥ ॐ नमो भगवते ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता
 कनिका ॥ ॐ नमो भगवते ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता
 कनिका ॥ ॐ नमो भगवते ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता
 कनिका ॥ ॐ नमो भगवते ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता

नाम
 १५

वग हयस्वाहा ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता
 स्वाहा ॥ भिवाय स्वाहा ॥ मायादय स्वाहा ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता
 ॥ ॐ नमो भगवते ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता
 स्वाहा ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता
 स्वाहा ॥ श्रीसम्वत् ॥ मासा पूनक्षिपा पय्यादि ॥ ॐ नमि मयि पूजा ॥ ॥ तनायता

सि० नि १३ स्वाहा ॥ त्रिषे स्वाहा ॥ लक्ष्मि स्वाहा ॥ वृक्षादिमुर्येति श्रुतिः ॥ कम्पनवाक्रीपद्मप्रश्रुतिः ॥
 दवचक्रं ॥ उत्कृष्टं श्रुतिः ॥ वैष्णवी ॥ दावपातः ॥ अमिताभ ॥ वक्रला ॥ गलधु ॥ इमाकलं
 रव ॥ इरवापिरवा ॥ गरुडभा ॥ एभ्रम ॥ कोमानि ॥ पूर्वदक्षिणश्रुतिः ॥ पञ्चपति ॥ मानश्वरी ॥
 मनाहना ॥ गत्रुडनायय ॥ तिलमाधवा ॥ हेतव ॥ नाभ्यना ॥ हनुमक ॥ मङ्गलश्वरी ॥ अनकलि
 ग ॥ नामकृष्णसुहृद्रा ॥ चरधुश्वरी ॥ कलचक्रश्वरी ॥ वृक्षाद्यादित्य ॥ स्वाहा ॥ दम्भापातनाय

नाम
१३

स्वाहा ॥ कालापातनाय स्वाहा ॥ वहिर्वागा ॥ अक्षय ॥ स्वाहा ॥ सर्वलगत्य ॥ स्वाहा ॥ सर्वकप्रत्य ॥ स्वाहा ॥ हित
 वरुध ॥ मूल ॥ त्वग ॥ रुद्रमा ॥ नाभ्यनद ॥ त्रवक ॥ इमाक ॥ वाकल ॥ मानश्वरी ॥ पिथ ॥ इथ ॥ थवमालका
 ॥ मूलमनुध ॥ १० ॥ घृणाकृतिपूर्व ॥ वाक् ॥ सुहृन्नाकिमदवीश्रुतिः ॥ वृतिघृणाकृतिपूर्व ॥ ॥ घृणावत
 नधं ॥ ॥ अथहामपात्रश्रुतिः ॥ अमुधप्राकृष्टं ॥ कवचननापनं ॥ अमुधसंमार्कनं ॥ चासुन ॥ चासुन ॥
 नग ॥ तिल ॥ गधुल ॥ मूल ॥ यव ॥ इद ॥ धनि ॥ घृण ॥ कील ॥ साखन ॥ मूलि ॥ दयसमिर ॥ अकमाला ॥ अ

सि० नि
१०

नहामपाश्रमः॥ मूलमनुष्यपंचकः॥ ॥ यजमानतनहामपाश्रमः॥ वाक्॥ यज्ञास्यात्वंप्रतिष्ठेहि
 निर्विघ्नंयस्यकर्मणि॥ ॥ हप्रलागुंऊकिपनग्रचभियागति॥ यजमानादिसर्वेषु राजानाद्युत्तराद
 य॥ सर्वभक्तिकनश्चेव सर्वदेवेषु उच्यते॥ ॥ वमकुग्रहीत्वा च सर्वभक्तिकनाम्पहं॥ सर्वद्रवितना
 आयलक्ष्मीसर्वार्थसिद्धिदा॥ यजमानतनमस्तु॥ अन्नसंकल्प॥ अन्नयवेभ्योननाय यथाप्राति
 मिताकृति संकल्पासिद्धिस्तु॥ ॥ गिलाकृतिविय॥ शिदवादिक्रमनं पूर्ववत्तृताकृतिवियाक

नाम
१०

मन॥ ॥ कलभप्रतिष्ठा॥ संख्याकृतिमूलनमालक॥ गिलाकृतिपूर्व॥ सर्वभद्रप्रमर्दकीयादि॥ ॥
 यथादवाचनं॥ वृषपूजा॥ पशुपूजा॥ पशुतर्पण॥ हिंदुय॥ मांभकाट॥ कलश॥ ॥ नयामदाचकंऊ
 वरववलाहानपाश॥ श्ववाश्ववालगमउचगलाश्वका॥ कथुसनीपगत्वा॥ ॥ भिनमांभ
 स्तान॥ अन्नमकुं॥ शूलस्तान॥ चउ४ संस्कार॥ लासकलेदवाल॥ चिवकनहमिद्रा॥ घृत॥
 शूलि॥ वाल॥ ॥ भिनकायलय॥ चन॥ सिंधन॥ नकचन्दन॥ रुजमका॥ मृदुवाल॥ मृदुस्तान

सु० न
१६

माला॥ आदूरुता॥ धनकयनप॥ ॥ विधिधं पञ्चधनापूजा॥ पूर्व ममता॥ त्रैलुं पादकां॥ दक्षि
धनका॥ त्रैलुं पादकां॥ पश्चिम कीर्ता॥ त्रैलुं पादकां॥ उरुन गं॥ धादका॥ त्रैलुं पादकां॥ मरध्या॥
विनामनि समय॥ त्रैलुं पादकां॥ ह३॥ ॥ भित्तमां सपूजता॥ रूंददयाय ३ वउ नपूजा॥
नवाक्षितनक्षत्रा॥ ॥ यरुमाननजापयक॥ वाक्॥ सहस्रनक्ष लंयाकि॥ कृगस्यपिभित्तकृग
॥ गिकालं मांसमकंडु सहस्रं नक्षत्रा॥ सिद्धगमांसहामन कोद्राशदधिसंयुगं॥ यवही नाल

राम
१६

नक्षत्रा उद्याम्यायां व्याधिनामहलप्रदं॥ ४

हामन सलित्तुलसाधितं॥ प्रीयतु भित्तादेवस्वकृदघातनपधका॥ कृगमांसकृलघ्नश्चपि
भित्तं वपा नक्ष॥ क्षीराचनगहवत्साकि दधिपूष्टिप्रजायक॥ यरुमानन आचार्यलवकाया॥ वाक्
॥ आचार्यकृगभित्तमांसउपदाह्यामि॥ ॥ पञ्चधनापूजा॥ वाक्॥ ममते प्राविधनायां विधिना
सहलप्रदं॥ क्षीरं पश्चिमधनायां आयुर्द्विहलप्रदं॥ उरुनसगधधनायां लक्ष्मीद्विहलप्र
दं॥ मरध्यादीनपाधधनायां मरध्यादीनपाधधनायां पंचधनाप्रसिद्धानि यरुकर्माणि सिद्ध

सि० न १९ ति॥ ॥ मांसाकृतिविय॥ अग्निसदाय॥ त्रिदव॥ यागिनी॥ चतुर्विदि॥ कथुदूतलोकपाल॥
 पंचवलि॥ कलसा॥ देव॥ मथवाचक॥ स्नानवलि॥ का० क॥ इखापिखा॥ व० क॥ ग० ना॥
 इमा॥ त्रिदवादिमालकां मांसाकृतिविय॥ ॥ आचार्यमन्त्रीसिद्धिमुत्वाहा॥ ॥ थान
 दवीका॥ मालयावा॥ नवाकन॥ धवा॥ मूलस्य॥ संख्याकृति॥ १०॥ ॥ ६०॥ रुद्रया॥ रुद्रसं॥ दय
 नदय॥ ला० रुद्रया॥ रुद्रसं॥ भित्तीनदय॥ ६०॥ खदया॥ खदसं॥ भित्तीनदय॥ ला० खद

नाम
 १९

याखदसं॥ कवचनदय॥ मदाचकं॥ स्वनेनदय॥ स्य॥ अमृतनदय॥ आह० न॥ व० ना॥
 ध० न॥ नवाकन॥ ध० न॥ ला० व० ५०॥ दूथस० नवाकन॥ ध० न॥ भित्तीनदय॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥
 ध० न॥ १०॥ नवाकन॥ ध० न॥ १०॥ थ० न॥ मालका० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥
 घ० न॥ हि० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥
 नय॥ घ० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥ म० न॥

15
 10
 5
 0
 सति मधुलेवाङ्गशपीरभपपीर सगद्यगद्ययुतं मधुलंसिद्धिचक्रं ॥ आसंयुक्तं च पूष्णीं च
 लिलिलिसहितं पत्रपा नादियुक्तं संवृष्टा सर्वदेवा कलनमखयुतं पाउमांसिद्धिलक्ष्मी
 स्वाहा ॥ अतिमांसादतिपूष्णीं ॥ पूजादासदयक ॥ सुलाघन सामनस एभनसाह
 नजील मलच लवाह मुक्त कसन किरहाल ॥ ॥ कालखद्युमुसंकुच्य कामि
 नधसमार्द्धतं ॥ आसंस्कालिद्युतनेव तफनाह विप्रचयत् ॥ धान्याकजीरम

त्रिचं लवंगं घनकारिकं ॥ जनेष्टादिष्टसमालाघ प्रसादसमयं रवत् ॥ विपिने
 सफधाकृत्वा मूलमकुधनत्वावित् ॥ प्रभदसिद्धिमकुला मपमृश्विनाभनं ॥ ज
 दिसिद्धिमकुसिद्धि वधसागधदायकं ॥ कालवंचनकं अष्टं हेनधनविनिर्मितं
 ॥ धनपूलादासयाविधि ॥ ॥ धनास्वागमलेहिसमन ॥ ला वलिसुक्काय
 ॥ धनासमृद्धावगया ॥ वलिसुत्रय ॥ वरिपूजादास मूलमकुध सफधाकृत्वा ॥

सि० न
२९

समय. पूजादास. पंचवक्त्राज्ञाया कंथनविद्यारकास्त॥ आचार्यन. पूजादास. समयकाठाव
तर्प्यदा॥ प्रीतिप्रतायादि॥ पूजादास. समय. अपनथिय॥ ॐ नमो सांसाकृति॥ ॥ यजमानप्रति
ष्ठा॥ नवाकरीमद्रुधआकृति॥ उत्कृ. लाम्बूकायादि॥ चतुर्वानत्वाय॥ ॥ नवाकरीनआकृति
क्षन१०॥ प्रतिष्ठितसिद्ध्यादि॥ गायहालश्रुवानत्वाय॥ ॥ भक्तिकाकृति॥ नवाकरीन
१०॥ हामपात्रसुवा६ समिधत्वा१दाय॥ ॐ भक्तिनमुस्वाहा॥ ॥ पूष्टिकाकृति॥ नवा

नाम
२९

करीन१०॥ हामपात्रसुवा६ समिधत्वा१दाय॥ ॐ पूष्टिनमुस्वाहा॥ आचार्यपूजा॥ ॥ प्रा
यश्चिद्रुहामं कृत्वा॥ ॐ क्रौं लें सदाज्ञायापश्चिमवक्त्राय प्रायश्चिद्रुहयस्वाहा॥ ॐ क्रौं वें वाम
दवाय उरुवक्त्राय प्रायश्चिद्रुहयस्वाहा॥ ॐ क्रौं नें श्रुदायाय दक्षिणवक्त्राय प्रायश्चिद्रुहय
स्वाहा॥ ॐ क्रौं यें गत्युप्राय पूर्ववक्त्राय प्रायश्चिद्रुहयस्वाहा॥ ॐ क्रौं दें ऋणायाय उर्ध्व
वक्त्राय प्रायश्चिद्रुहयस्वाहा॥ ॐ नमो प्रायश्चिद्रुहामं॥ ॥ विहिहाम॥ यवधान्यादिला

सि० नि
२३

ॐ क्रौपवनाय स्वाहा ॥ ॐ क्रौवराय स्वाहा ॥ ॐ क्रौवरीभय स्वाहा ॥ ॐ क्रौवक्षत्राय स्वाहा ॥ ॐ
क्रौविक्रव स्वाहा ॥ ॐ क्रौवपालाय स्वाहा ॥ ॥ दातसविय ॥ ॐ क्रौवशानपीभय स्वाहा ॥ ॐ
क्रौवलंधनपीभय स्वाहा ॥ ॐ क्रौवपूर्वगिरिपीभय स्वाहा ॥ ॐ क्रौवकामरपीभय स्वाहा ॥
दादया ॥ धरया वलि ॥ ॥ दयवलिह नद्यं ॥ दक्षिणादानं ॥ वाचनतय ॥ ॥ अथ पूर्वार्क ॥ नवा
हानिधश्रुतिगि ॥ ॥ अवाभयलप्यापलंथन ॥ स्वानमाल ॥ वास थं थूकहायकं गया

गाम
२३

व अइवालतय ॥ ॥ यऊमानधवक जानकं गया ॥ अक अवाका हावना हिचूलिनदिनकं
गयाव ॥ वाव ॥ श्रीसुन्दरी ॥ उल्लूलां ॥ ॐ श्री ॥ नवाकननम स्वाहा वीषद ॥ दाय ॥ ॥
प्रथम्य ॥ अवाधवक अक्षमखं कला ॥ ॐ श्री ॥ ॐ तिपूर्वार्क ॥ ॥ आसंसार अकंपर ॥
॥ मधुलदयक स्वानतय ॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्रीसिद्धिलक्ष्मी श्रीसिद्धेश्वर महादेव वाय
॥ ॥ वक्रादिमुखे ॥ सुनलाकपाले ॥ गत्यार्जिताय प्रणतस्तुतथा ॥ स्वयं हे नवमादिदं न

15

सि० नि
२४

श्रुत्वा यत्नं भगवं प्रवय ॥ उत्कृष्टा मूर्त कर्त्तृका पात्रा गता श्रीसिद्धिलक्ष्मीपता कर्पू न
 स्त्रीकन्दकन्दधवरा निशमषपाभापहा ॥ संसा नार्थवदश्चपंकदहनी निष्कमा नं सर्वदा
 श्रीमत्पंचमूर्त्तवृत्तादभुजा प्रतीति तापा तुनः ॥ ॐ न्याया लोकपालाः स्वस्वदिगवभि
 ताः स्वस्वमूद्रास्वयूका आदिशादिग्रहं आवसति हविस्तदा जन्मदवस्वरूपाः ॥ मृदाया ग
 लतीर्थगणपुत्रवद्कास्तु छिलमादृक्वा सिद्धिः श्रयाददातु वतु वसु मतीयरूपं पूर्णं

नाम
२४

10

5

६

गुहाः ॥ ॐ नमो भूतये ॥ गङ्गायां कानि विभं हव कल्हं पावनं हर्षवश्च ॥ स्वर्षीयं वि
 भवापं मृत्तुन नमि तं हास्तनं भाकि हस्तं ॥ जना आशु नरात्मा कलमपि नि कनं सुसुखा
 निस्तुल्यं वन्दवर्त्तु क उद्विजनि खिल पुत्रं साचिक भं हव नं ॥ ॥ मृत्पदाय स्पपादाय
 रुतपवर्षः सामवदा रुतं नकाथर्षा द्वितीयं भगपथवदनं वाहती प्रवृत्ता घाघे ॥ गभयश्री
 यस्पगभं नयन उपनिषद् वृक्षः ॥ श्रीवृद्धं व्या विक्रपक नमर्त्तु हवतु मतीयरूपं पूर्णं

0

Cms.

5

10

15

20

25

15

सि० नि
२५

वराह॥ अस्मत्सु कार्यसंस्तु कलसस्तु छिल वेभननदि कदवती सुप्रीता वनदाह वस्तु निश्च
हामनिश्चार्थन यथामाका कुरु लदायिनाह वस्तु एभवा सुख्य भुहं हवतु नाजाधर्मवि
रुयनस्तु प्रजा सुखिनस्तु सर्वसत्वा सुखी हवतु पर्यन्तकालवर्षीया हवतु नाशु भुहं हव
तु द्विपदश्चतुष्पदानां भक्तिर्हवतु पर्यहं हवतु॥ अस्मत्प्राप्ता विप्रतिना जाधिना उपनमभ्यन
पनमहर्दीक श्री श्री सुमतिरुयजिता मित्रमल्लदव ह्यखनसिद्धिस्तु प्रतापादयामु अस्म

नाम
२५

10

5

दादीनां मनुसिद्धिस्तु यजमानस्य सिद्धातिनिश्च हामनिश्चार्थन भक्तिर्हवतु पर्य
हं हवतु॥ त्वंगति सुखरुतानां संस्तु तं सवराचल॥ अस्तु अत्रलरुतानां दृष्टा त्वं परमेश्वरी
॥ कर्मक्षमनसावाचा ततान्यायादियत्कृतं॥ अस्तु तं वाक्कीर्तन तद्रूपरुता भन॥ मनु
हिनं क्रियाहीनं हकिहीनं तथेवच॥ उपहामार्चनाहीनं कर्मतां परमेश्वरि॥ पापाहं पाप
कर्माक्षं पापात्पापापसंरुवा॥ ग्राहिमांदवदवभि सर्वपापहना हन॥ ॥ अस्तु गन्ध पूष

0

Cms.

5

10

15

20

25

सू. नि २३ धूप दीप अर्चन पूजा विधानं तत्सर्वं परिपूर्णम् ॥ ॥ नृत्ति सिद्धाग्नि निश्चयं हामं आसंसा
 ॥ ॥ कंस मापं ॥ ॥ श्री भाषाद ॥ प्रकानक ॥ अम्ब पूर्व ॥ ॥ वेदी दाय ॥ अवा न हस्म तिलकं का न
 यत् ॥ ॥ च उवा सध पश्चादाव श्रि कान स काय ॥ धम गय . ऊव . खव . वा हा स . नृग म उ स
 व स पन स न य ॥ य रु मान स कलं ग व क ॥ ॥ अर्घ पाशाद क न क धु त्रि म नं ३ ॥ अक्ष म्ब ख
 क्त्वा ॥ ॥ त्रिं ग क ग क्त्वा नृ अक्ष . आत्मा संसा न वाहन ॥ य प्र व क्षा द या द वा . त ग क्त्वा स न ॥

नाम
२३

कमस्व ॥ ॥ अघ हाम ॥ न्या स लिकाय . कल भादि . श्री न . बलि वि स र्ज न ॥ सं हा न म्द्रा ॥ बलि
 कृ प ॥ य रु माना लिष क ॥ च न्द नादि ॥ आ स र्वा द ॥ सा दि ध म्ब ॥ नृत्ति निश्चय सिद्धाग्नि विधि समा
 पं ॥ ॥ न पा ला द ग न व र्ध . भ भि व सं क म व वा ॥ हा ल्य र ह अ कृ प क्त . क वि वा स न म व च
 ॥ दे व रु स्य क ल जा ग . रा म ना ना य र ह न व ॥ स प ष षि ग न व र्ध . मा सै कं म क विं भ ति ॥ अ
 स्मिं काले लिखित्वा च . सिद्धाग्नि हाम म्द्रा ति ॥ यदि शुद्ध म्द्रा वा . सा ध नी यं म हा वृ

15

10

5

0

मि ५१
 सि० न २१ ॥ ओ॥ सं० १५ वेष्म वरु प्र मष्टमि उन्वात्र थुषुन श्री श्री सुमति रुय जिताँमः सुदवत दयकात
 पुसहुलिसस्वया वाया रुला॥ श्री श्री श्री सिद्धिलक्ष्मी सुप्रीति नमु॥ ॥ अरुम ॥ ॥

८६. नित्य शि ताव्ना विधि - २६
 प्रकोपी

गम
 २१

Cms.

5

10

15

20

25